National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2026; 1(66): 91-93
© 2026 NJHSR
www.sanskritarticle.com

प्रो. (डॉ.) पाडुर सुब्रमण्य शास्त्री
एम.ए., सी.ओ.ए., पीएच.डी.(संस्कृत),
पीएच.डी. (ज्योतिष),
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष,ज्योतिष विभाग,
संस्कृति विश्वविद्यालय, मथुरा-वृंदावन,
उत्तर प्रदेश।

Correspondence:
प्रो. (डॉ.) पाडुर सुब्रमण्य शास्त्री
एम.ए., सी.ओ.ए., पीएच.डी.(संस्कृत),
पीएच.डी. (ज्योतिष),
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष,ज्योतिष विभाग,
संस्कृति विश्वविद्यालय, मथुरा-वृंदावन,
उत्तर प्रदेश।

बृहस्पति गोचर 2026 : उच्चस्थ गुरु का दिव्य प्रभाव, राशिफल एवं उपाय

प्रो. (डॉ.) पाडुर सुब्रमण्य शास्त्री

भूमिका

वैदिक ज्योतिष में बृहस्पति (गुरु) को नवग्रहों में सर्वाधिक शुभ ग्रह माना गया है। वे देवताओं के आचार्य, धर्म, ज्ञान, सदाचार, विद्या, संतान, विवाह, धन, सम्मान तथा आध्यात्मिक उन्नति के अधिष्ठाता हैं। ज्योतिषशास्त्र में यह मान्यता है कि यदि किसी जातक पर गुरु की कृपा हो जाए तो जीवन के अनेक क्षेत्रों में स्वतः शुभता का संचार होने लगता है। इसी कारण कहा जाता है कि—

"यदि गुरु की दृष्टि पड़ जाए, तो लाखों आशीर्वाद बरसते हैं।"

गुरु केवल भौतिक समृद्धि ही नहीं प्रदान करते, बल्कि जीवन को धर्म, विवेक और आध्यात्मिक चेतना की ओर भी अग्रसर करते हैं। अतः प्रत्येक व्यक्ति को गुरु कृपा प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए।

बृहस्पति गोचर 2026 : एक महत्वपूर्ण ज्योतिषीय घटना

02 जून 2026 को देवगुरु बृहस्पति मिथुन राशि को छोड़कर अपनी उच्च राशि **कर्क (कटक)** में प्रवेश करेंगे। यह गोचर अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावशाली माना जा रहा है, क्योंकि कर्क राशि बृहस्पति की उच्च राशि है।

03 जून 2026 से प्रारम्भ होने वाला यह गोचर अनेक व्यक्तियों के जीवन में आध्यात्मिक तथा सांसारिक दोनों स्तरों पर महत्वपूर्ण परिवर्तन ला सकता है। उच्चस्थ गुरु की कृपा से अनेक लोगों को ऐसे शुभ अवसर प्राप्त हो सकते हैं जो राजयोग के समान प्रभाव उत्पन्न करें।

शास्त्रों में गुरु की महिमा का वर्णन करते हुए कहा गया है कि यदि देवगुरु अनुकूल हों तो अन्य ग्रह तथा देवतागण भी अनुकूल हो जाते हैं। इसलिए ज्योतिषशास्त्र गुरु उपासना को विशेष महत्व प्रदान करता है।

गुरु गोचर 2026 : तिथि एवं समय

- **तिथि:** 02 जून 2026
- **राशि परिवर्तन:** मिथुन राशि से कर्क राशि में प्रवेश
- **स्थिति:** उच्च (Exalted)
- **विशेषता:** वर्ष का अत्यंत शुभ एवं प्रभावशाली गोचर

गुरु गोचर के चरण

अवधि	स्थिति
02 जून 2026 – 31 अक्टूबर 2026	कर्क राशि में सीधी चाल
31 अक्टूबर 2026 – 24 जनवरी 2027	सिंह राशि में अतिचार गति
13 दिसम्बर 2026 – 13 अप्रैल 2027	वक्री गति
24 जनवरी 2027 के बाद	पुनः कर्क राशि में प्रवेश

कुल मिलाकर गुरु लगभग 305 दिनों तक कर्क राशि के प्रभाव क्षेत्र में रहेंगे।

बृहस्पति गोचर का शास्त्रीय महत्व

ज्योतिषीय परंपरा में गुरु की गोचर स्थिति को अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है।

गोचर फल के संदर्भ में एक प्रसिद्ध शास्त्रीय श्लोक इस प्रकार है—

जन्मे गुरुगते साक्षात् श्रीरामो वनवास्यभूत् ।
तृतीये बलि पाताले तुरीये भ्रष्ट पाण्डवाः ॥
षष्टे तु गुरु गोचारे द्रौपति वस्त्रहारणं ।
अष्टमे गुरु गोचारे बालि युद्धे वधोभ्यभूत् ॥
दशमे धारिकश्चेदः व्यये दशाननो हतः ।
एवं ज्ञातं ततस्माभिः गुरोर्गोचरगं फलं ॥

अर्थात् विभिन्न भावों में गुरु के गोचर के अनुसार जीवन में विविध प्रकार के परिणाम उत्पन्न होते हैं। यह श्लोक इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि गोचर का प्रभाव अत्यंत महत्वपूर्ण है और जीवन की घटनाओं पर उसका गहरा प्रभाव पड़ता है।

इसी प्रकार *प्रश्नमार्ग* में गोचरस्थ बृहस्पति के संबंध में निम्न श्लोक उल्लेखनीय हैं—

भ्रंशात्स्वान्पदतः कार्यविहतीर्नृणां तृतीयस्थिते।
जीवे तस्तुषि षष्ठभे न हि सुखं तल्लाभसाधने सत्यपि।
तीव्रादुःखगदा निबन्धनमजश्राद्ध्वाटनं चाष्टमे।
दीर्घाध्वाटनमुग्रदुःखजननं चान्त्यस्थिते सम्भवेत्।

कर्क राशि में गुरु का विशेष प्रभाव

कर्क राशि बृहस्पति की उच्च राशि है। इस कारण इस अवधि में गुरु अपनी सर्वोत्तम शक्ति के साथ कार्य करेंगे। गुरु की विशेष दृष्टियाँ 5वें, 7वें और 9वें भाव पर पड़ती हैं, जिसके कारण निम्न क्षेत्रों में विशेष लाभ प्राप्त हो सकता है—

- विवाह एवं वैवाहिक जीवन
- संतान प्राप्ति एवं संतान सुख
- उच्च शिक्षा एवं प्रतियोगी परीक्षाएँ
- पदोन्नति एवं करियर उन्नति
- आर्थिक समृद्धि
- धार्मिक एवं आध्यात्मिक विकास
- पारिवारिक सुख एवं मानसिक शांति

यदि जन्मकुंडली में चन्द्रमा भी शुभ स्थिति में हो तो गुरु-चन्द्र योग से प्रसिद्ध **गजकेसरी योग** बनने की संभावना रहती है, जो प्रतिष्ठा, सम्मान और सफलता प्रदान करता है।

गोचर फल को समझने की सही दृष्टि

अनुभवी ज्योतिषाचार्यों का मत है कि केवल गोचर के आधार पर अंतिम निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए।

जिस प्रकार मौसम का प्रभाव सभी व्यक्तियों पर समान रूप से नहीं पड़ता, उसी प्रकार ग्रह गोचर भी सभी लोगों को समान फल नहीं देते। वास्तविक फल मुख्यतः तीन कारकों पर निर्भर करता है—

1. जन्मकुंडली में ग्रहों की स्थिति
2. वर्तमान महादशा एवं अंतरदशा
3. गोचर की स्थिति

यदि किसी जातक की दशा-अंतरदशा अनुकूल हो तो गोचरजनित दोषों का प्रभाव बहुत कम हो सकता है।

किन राशियों एवं नक्षत्रों को अधिक सावधानी रखनी चाहिए?

ज्योतिषीय सिद्धांत के अनुसार जब गुरु जन्म राशि से 1, 3, 4, 6, 8, 10 और 12वें स्थान में गोचर करते हैं, तब अपेक्षाकृत कम शुभ फल प्रदान करते हैं।

वर्तमान गोचर के अनुसार निम्न राशियों को विशेष सावधानी रखने की आवश्यकता हो सकती है—

- कर्क (जन्म गुरु)
- सिंह (12वें गुरु)
- तुला (10वें गुरु)
- धनु (8वें गुरु)
- कुंभ (6ठे गुरु)
- मेष (4थे गुरु)
- वृषभ (3रे गुरु)

विशेष रूप से 3, 6, 8 और 12वें स्थान के गुरु को अधिक चुनौतीपूर्ण माना गया है।

राशिवार संभावित फल

कर्क राशि (जन्म गुरु)

- स्थान परिवर्तन
- धन हानि
- विवाद एवं मानसिक तनाव
- निर्णय क्षमता में कमी

मिथुन राशि (द्वितीय गुरु)

- धन लाभ
- पारिवारिक सुख
- शत्रु विजय
- आर्थिक स्थिरता

मेष राशि (चतुर्थ गुरु)

- पारिवारिक चिंता
- संबंधियों से दुःख
- मानसिक अशांति

मीन राशि (पंचम गुरु)

- संतान सुख
- शिक्षा में सफलता
- वाहन, वस्त्र, स्वर्ण एवं संपत्ति लाभ

कुंभ राशि (षष्ठ गुरु)

शास्त्र कहता है—

"जीवे तस्तुषि षष्ठभे न हि सुखं तल्लाभसाधने सत्यपि"

अर्थात् सुख-सुविधाएँ उपलब्ध होने पर भी मन में संतोष का अभाव रह सकता है।

मकर राशि (सप्तम गुरु)

- दाम्पत्य सुख
- कार्य सिद्धि
- वाणी एवं बुद्धि का प्रभाव
- आर्थिक लाभ

वृश्चिक राशि (नवम गुरु)

- भाग्योदय
- धर्मकर्म में रुचि
- संतान सुख
- सम्मान वृद्धि

तुला राशि (दशम गुरु)

- पद परिवर्तन
- कार्यक्षेत्र में दबाव
- धन हानि की संभावना

कन्या राशि (एकादश गुरु)

- इच्छित कार्यों की सिद्धि
- लाभ के अवसर
- पद एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि

विशेष नक्षत्र फल

धनु कूर (मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा प्रथम चरण)

जब गुरु अष्टम स्थान में हों—

"तीव्रादुःखगदा निबन्धनमजश्राद्ध्वाटनं चाष्टमे"

अर्थात् कष्ट, रोग, बंधन तथा यात्राजनित परेशानियाँ हो सकती हैं।

सिंह कूर (मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी प्रथम चरण)

जब गुरु द्वादश स्थान में हों—

"दीर्घाध्वाटनमुग्रदुःखजननं चान्त्यस्थिते सम्भवेत्"

अर्थात् अत्यधिक यात्राएँ तथा मानसिक कष्ट की संभावना रहती है।

वृषभ कूर (कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा)

जब गुरु तृतीय स्थान में हों—

"भ्रंशात्स्वान्पदतः कार्यविहतीर्नृणां तृतीयस्थिते"

अर्थात् पद परिवर्तन, योजनाओं में रुकावट तथा कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

गुरु दोष शांति के उपाय

जिन जातकों को इस गोचर से प्रतिकूलता की आशंका हो, वे निम्न उपाय कर सकते हैं—

1. गुरु मंत्र जप

प्रतिदिन अथवा प्रत्येक गुरुवार को—

ॐ बृं बृहस्पतये नमः।

का 108 बार जप करें।

2. विष्णु एवं दत्तात्रेय उपासना

भगवान विष्णु, श्रीकृष्ण तथा भगवान दत्तात्रेय की आराधना विशेष फलदायी मानी जाती है।

3. गुरुवार व्रत

- पीले वस्त्र धारण करें।
- हल्दी, चने की दाल तथा पीले फल का दान करें।
- सात्त्विक भोजन ग्रहण करें।

4. गुरुजनों का सम्मान

गुरु ग्रह ज्ञान और सदाचार का प्रतीक है। अतः—

- माता-पिता की सेवा करें।
- शिक्षकों का सम्मान करें।
- धार्मिक कार्यों में भाग लें।
- विद्वानों का आदर करें।

5. गुरु मूल मंत्र जप करें-

"ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः"

लेखक की अनुभूतिजन्य टिप्पणियाँ

इस लेख में वर्णित कुछ विश्लेषण केवल ग्रंथाधारित नहीं हैं, बल्कि लगभग तीन दशकों से अधिक समय तक हजारों जन्मकुण्डलियों, गोचर परिणामों तथा दशा-भुक्ति के तुलनात्मक अध्ययन से प्राप्त अनुभवों पर भी आधारित हैं।

लेखक का मत है कि—

"गोचरफल का प्रभाव लगभग एक-चतुर्थांश (25%) तक ही प्रत्यक्ष रूप से कार्य करता है; शेष फल जन्मकुण्डली में ग्रहों की स्थिति, महादशा-अंतरदशा तथा व्यक्ति के कर्मानुसार परिवर्तित हो सकता है।"

इसी कारण एक ही नक्षत्र अथवा राशि में जन्मे सभी व्यक्तियों को समान फल प्राप्त नहीं होते।

अनुभवजन्य अध्ययन के आधार पर यह भी देखा गया है कि—

- तृतीय, षष्ठ, अष्टम और द्वादशस्थ गुरु अपेक्षाकृत अधिक सावधानी की अपेक्षा करते हैं।
- यदि महादशा एवं अंतरदशा अनुकूल हो तो गोचरजन्य दोषों का प्रभाव अत्यंत कम हो जाता है।
- शुभ जन्मकुण्डली में प्रतिकूल गोचर भी गंभीर हानि नहीं पहुँचाता।
- अशुभ दशा एवं प्रतिकूल गोचर का संयोग होने पर विशेष सतर्कता आवश्यक होती है।

निष्कर्ष

02 जून 2026 को प्रारम्भ होने वाला कर्क राशि का गुरु गोचर वर्ष की सबसे महत्वपूर्ण ज्योतिषीय घटनाओं में से एक है। उच्चस्थ बृहस्पति शिक्षा, विवाह, संतान, करियर, आर्थिक उन्नति और आध्यात्मिक विकास के अनेक द्वार खोल सकते हैं। यद्यपि कुछ राशियों एवं नक्षत्रों के लिए सावधानी अपेक्षित है, तथापि उचित आचरण, सद्कर्म, गुरु उपासना तथा शास्त्रोक्त उपायों द्वारा संभावित कठिनाइयों को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

अंततः स्मरणीय है कि गोचर संभावनाओं का संकेत देता है, जबकि वास्तविक फल जन्मकुंडली, दशा-अंतरदशा और व्यक्ति के कर्मों पर निर्भर करता है। अतः ज्योतिष को भय का नहीं, बल्कि जागरूकता और मार्गदर्शन का विज्ञान समझना चाहिए।

देवगुरु बृहस्पति की कृपा सभी पर बनी रहे तथा यह गुरु गोचर सभी के जीवन में ज्ञान, समृद्धि और मंगल का कारण बने—इसी शुभकामना के साथ।

संदर्भ एवं ग्रंथाधार

बृहस्पति गोचर 2026 के संबंध में प्रस्तुत विचार निम्नलिखित ज्योतिषीय ग्रंथों, पारंपरिक सिद्धांतों तथा लेखक के दीर्घकालीन अनुभवजन्य अध्ययन पर आधारित हैं—

प्रमुख ज्योतिष ग्रंथ

1. **फलदीपिका** — फलदीपिका
   - o गोचर, ग्रहफल, योग तथा दशा-फल संबंधी सिद्धांत।
2. **प्रश्नमार्ग** — प्रश्नमार्ग
   - o गोचरफल, कालदोष, ग्रहगत शुभाशुभ प्रभाव एवं व्यवहारिक फलनिर्णय।
3. **बृहत्पाराशर होरा शास्त्र** — बृहत्पाराशर होरा शास्त्र
   - o ग्रहस्वभाव, भावफल, दशा एवं गोचर के मूल सिद्धांत।
4. **बृहत्जातक** — बृहत्जातक
   - o ग्रहों के शुभाशुभ प्रभाव एवं फलनिर्णय।
5. **सारावली** — सारावली
   - o ग्रहों एवं भावों के विस्तृत फल।
6. **जातक पारिजात** — जातक पारिजात
   - o ग्रहफल एवं योगविचार।
7. **मुहूर्त चिंतामणि** — मुहूर्त चिंतामणि
   - o ग्रहों के कालगत प्रभाव एवं शुभाशुभ विचार।

घोषणा: इस लेख में उद्धृत शास्त्रीय श्लोक प्रामाणिक ज्योतिषीय ग्रंथों से लिए गए हैं। राशिफल एवं व्याख्याएँ ग्रंथाधारित सिद्धांतों, परंपरागत गुरु-परंपरा तथा लेखक के दीर्घकालीन अनुभवजन्य अध्ययन का समन्वित स्वरूप हैं। अतः अंतिम फलादेश के लिए व्यक्तिगत जन्मकुण्डली, दशा-अंतरदशा एवं ग्रहबल का पृथक परीक्षण आवश्यक है।

शुभं भूयात्